Lecture - 132

ग्लोबल वार्मिंग या हरितगृह प्रभाव :-

Mamta Rani
Guest Assistant Prof.
Deptt. of History
SNSRKS. College.
Saharsa.

BA Part - 3rd.
General Studies.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

इसे COP-21 नाम दिया गया है जलवायु परिवर्तन पर यह विश्व का सबसे बड़ा सम्मेलन है। भारत इसमें प्रथम अवेतन आयोजन के रूप मे सामने आया है।

His

Q. बिहार मे आदिवासी आन्दोलन पर संक्षिप्त निबंध लिखें !

उत्तर →

हो / होम विद्रोह - (1820) → संथाल विद्रोह (1855-56)
कोल विद्रोह - (1830-31) → बिरसा आन्दोलन (1899)
ताना भगत आंदोलन (1914) → जतरा भगत {उराँव जनजाति}

↓

गाँधी वादी विचार धारा

↓

सत्य और अहिंसा, स्वदेशी, बहिष्कार

असहयोग आ० व
सविनय अवज्ञा आन्दोलन

बिहार मे उपर्युक्त आदिवासी आन्दोलन का अध्ययन निम्नलिखित रूपो मे

बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र मे हो जनजाती और कोल जनजाती के लोगो ने अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह अपने-2 क्षेत्र मे और समाज मे किया गया सामूहिक प्रयास के रूप मे था जिसको सरकार ने कुचल दिया लेकिन आ० की शुरुआत हो जाने पर इसको भी व्यापक पैमाने पर बिहार मे आदिवासी आ० संचालित किया गया - संथाल, बिरसा, - - आदि -

ताना भगत →

यह आ० उराँव जनजाती के लोगो के द्वारा चलाया गया था भारत मे राष्ट्रीय आ० की 2nd चरण मे जतरा भगत के द्वारा 1914 मे बिहार मे इस आ० को चलाया गया। इस आ० का कारण भी अन्य जनजाती आ० के कारणो के समान था लेकिन इसका स्वरूप अन्य जनजाती आ० के विपरित था। इस आ० मे हिंसा का प्रयोग नही दिखाई पड़ता है। इसलिए यह कहा जाता है कि ताना भगत आ० गाँधी वादी विचार धारा से प्रभावित आ० था जिसके सत्य और अहिंसा दो प्रमुख हथियार थे

यह आन्दोलन जिस समय चलाया गया था भारतीय राजनीति मे गाँधी जी का आगमन हो रहा था। परिणाम स्वरूप यह आ० आगे चलकर राष्ट्रीय आ० मे शामिल हो गया और

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

ग्लोबल वार्मिंग या हरित गृह प्रभाव का वर्णन करें।

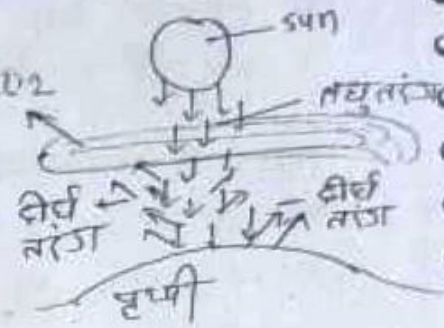

वायुमंडल मे दिनो-दिन CO_2 गैस की मात्रा बढ़ चुकी है और लगातार बढ़ती ही आ रही है। सूर्य से आने वाली किरण जो लघु तरंग के रूप मे आता है उसे धरातल पर आने दे देता है लेकिन जब वह दीर्घ तरंग के रूप मे वायु मण्डल मे लौटता है तो उसे जाने नही देता है, बाधा उत्पन्न करता है जिसके कारण पृथ्वी का ताप-मान दिनो दिन बढ़ता ही जा रहा है। तापमान की बढ़ने की इसी घटना को हरित गृह प्रभाव कहते है।

चूंकि इससे दिनो-दिन तापमान मे वृद्धि हो रही है इसलिए इसे ग्लोबल वार्मिंग की कर (भू-मण्डलीय ताप मान मे वृद्धि) भी कहते है। इसी ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुविय प्रदेश स्थित वर्फ पिघलती जा रही है, समुद्र की जल स्तर मे वृद्धि हो रही है फलत: समुद्र तटवर्ति देश या इलाका के जलमग्न होने की आशंका बढ़ रही है। इसी कारण यह विश्वव्यापिय चिंतनिय पहलू हो चुका है। इसी को देखते हुए विश्व के सन्दर्भ मे पहली बार ब्राजिल के शहर रियो-डि-जेनरो मे प्रथम पृथ्वी सम्मेलन बुलाया गया। इसका दस्तावेज - एजेन्डा - 21 कहलाया। पुन: 1997 मे जापान के शहर क्यूटो मे क्यूटो संधि हुआ जिसे क्यूटो प्रोटोकॉल का भी नाम दिया जाता है। इसमे अमेरिका ने अपना सहयोगात्मक रूप नही दिखाया फिर भी उस दिशा मे यह एक सार्थक पहलू था। पुन: 2002 मे 2nd पृथ्वी सम्मेलन दक्षिण अफ्रिका के केपटाउन शहर मे हुआ। इसमे पहली बार कर्पे की भागिदारी दी गई। पुन: 2012 मे दूसरी बार तीसरा पृथ्वी सम्मेलन ब्राजिल के रियो-डि-जेनरो मे ही हुआ जिसे रियो-20 नाम दिया गया। इसी मे the future we want का नारा दिया गया। पुन: इस दिशा निर्णायक और सार्थक पहलू 2015 मे फ्रांस की राजधानी पेरिस मे ~~जलवायु परिवर्तन मे~~ विश्व के 196 देश ने मिलकर जलवायु परिवर्तन पर गंभीर समस्या से निपटने की ओर कदम बढ़ाया।